हिमाचल में बसे बौद्ध शरणार्थियों में व्यापत संगीत एवं संस्कृति : एक झलक

डॉ० संगीता गौरंग
एसोसिएट प्रोफेसर
संगीत विभाग
के०वी०ए० डी०ए०वी० कॉलेज फॉर वुमन
करनाल, हरियाणा
ईमेलः sangeetagorang@gmail.com

सारांश

तिब्बतियन बौद्ध संगीत शास्त्रीय संगीत पर आधारित न होकर लोकसंगीत पर आधारित हैं। लोकसंगीत चाहे भारत के किसी क्षेत्रीय प्रान्त का हो, तिब्बत का हो अथवा किसी अन्य देश का, शास्त्रीय संगीत से भिन्नता रखता हैं। लोक संगीत के अर्न्तगत लोक–गीतों का साहित्य अपनी–अपनी प्रान्तीय भाषाओं पर आधारित होता हैं। तथा इनमें प्रयुक्त लय, ताल, स्वरों का उतार–चढ़ाव एंव वाद्य आदि ही लोकगीतों में सांगीतिक अंश भरते हैं। लोकगीतों को संगीतिक बनाने में लोक–धुने विभिन्न प्रान्तों की अपनी–अपनी संस्कृति, भाषा, रहन–सहन, रीति–रिवाज के आधार पर बनती हैं इसीलिये विभिन्न प्रान्तों में अलग–अलग लोक धुनें प्रचलित हैं, भारत की जैसे–ब्रज की होरी धुन, पंजाब का टप्पा–हीर–माहिया उत्तर प्रदेश की कजरी, गुजरात का गरबा, हिमाचल की पहाड़ी धुन आदि तथा तिब्बत की जैसे– लहासा का नंगमा, उत्तर–पश्चिमी तिब्बत का स्टोड गज़हास इत्यादि। जो वर्तमान में भारतीय तिब्बती बौद्धों द्वारा गाई–बजाई जाती हैं।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 20.02.2022
Approved: 11.03.2022

डॉ० संगीता गौरंग

हिमाचल में बसे बौद्ध शरणार्थियों में व्यापत संगीत एवं संस्कृति : एक झलक

RJPP Oct.21-Mar.22, Vol. XX, No. I,

pp.103-107
Article No. 12

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2022-vol-xx-no-1

परिचय

हिमाचल प्रदेश की काँगड़ा घाटी में मैकलोड़गंज धर्मशाला नामक स्थान, जो कांगड़ा ज़िले के मुख्यालय से लगभग 18 किलोमीटर दूर धौलाधार पहाड़ी श्रखंला में स्थित हैं। धौलाधार की यह पहाड़ी श्रंखला हिमालय के बाहरी आंचल का भाग हैं और इसकी ऊँचाई 15,000 फूट हैं। मैकलोडगंड के समीप 'लाका जोत' नामक एक दर्रा हैं। यहाँ दिसम्बर–जनवरी से लेकर जुलाई–अगस्त तक इन पहाड़ियों के ऊपरी भागों पर बर्फ रहती हैं। बाद में कहीं–कहीं बर्फ की पट्टी ही शेष रह जाती हैं काँगड़ा वासी इसे 'सुराली दा फेर' कहते हैं।

ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार इसके उत्तर–पश्चिमी दिशा में चम्बा, उत्तर में कश्मीर, पूर्व में तिब्बत, दक्षिण में शिमला स्थित हैं।[1]

बौद्ध तीर्थ स्थल मैकलोड़गंज (धर्मशाला)

भारत में बौद्धधर्म के आधुनिक तीर्थ–स्थल के रुप में धर्मशाला पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। नोबल पुरुस्कार से सम्मानित पवन दलाईलामा, "दलाईलामा"[2] परम्परा के चौदवें गुरु हैं। तिब्बती बौद्ध धर्म की मान्यताओं के अनुसार ये अवलोकितेश्वर के अवतार (रिमपोछे RIM POCHE) हैं। पूरे विश्व में बौद्ध धर्मावलंबी उनका आदर करते हैं, और श्रद्धा के साथ उनकी शिक्षाओं को मानते हैं।

सन् 1959 ई० में चीन से अपने सहयोगियों व अनुयायियों सहित भारत में आगमन हुआ था। कुछ महिने मंसूरी में व्यतीत करने के पश्चात् प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरु ने इनहे धर्मशाला स्थित मैकलोड़गंज में रहने की आज्ञा दे दी।

आज धर्मशाला का सबसे मुख्य आकर्षण तिब्बती बुद्ध मठ हैं यह स्थान परम पावन दलाईलामा जी के निवास स्थान होने के कारण बौद्धधर्म तिब्बती की संस्कृति का केन्द्र बिन्दु बन गया हैं। लोग इसे छोटा लहासा भी कहते हैं। मकलोड़ गंज के ठीक मध्य में एक स्तुप और एक मन्दिर में घूमने वाला एक विशाल प्रार्थना चक्र बना हैं। इसके अतिरिक्त दोनों बाहरी दीवारों के साथ–साथ अनेकों छोटे प्रार्थना चक्र बने हैं, जिनको प्रत्येक आने–जाने वाला बौद्ध धर्मानुयायी घुमाकर पुण्य अर्जित करता हैं। इन प्रार्थना चक्रों पर पवित्र मंत्र "ऊँ मणि पदमें हं" खुदा हुआ हैं। तिब्बती बौद्ध परम्परा के अनुसार इस प्रार्थना चक्र को घुमाने से मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।

मैकलोड़ गंज बाजार से थोड़ी दूर पश्चिम की ओर एक छोटी सी पहाड़ी हैं, जिसे थैगछन छौलिंग (THE GCHEN CHOSLING) के नाम से जाना जाता हैं। इस पहाड़ी पर दलाईलामा जी का निवास स्थान, चुगल्हाखंड (Tsuglagkharg) मन्दिर व उसका सभा कक्ष, बौद्ध दर्शन अध्ययन संस्थान, नांग्याल तान्त्रिक महाविद्यालय भिक्षुओं–भिक्षुणियों के रहने का निवास स्थान इत्यादि निर्मित हैं। इस पहाड़ी के चारों ओर एक रास्ता बना है, जो पहाड़ी की प्रदक्षिण करने के लिये हैं। बौद्ध धर्मावलम्बी कम से कम दिन में एक बार अवश्य इस मार्ग का प्रयोग करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। इस बौद्ध मन्दिर में जोकि मकलोड़गंज से लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर होगा, के मार्ग में स्थान–स्थान पर पत्थरों पर बौद्ध मन्दिर में जो कि मकलोड़गंज से लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर होगा, के मार्ग में स्थान–स्थान पर पत्थरों पर बौद्ध मन्त्र खुदे हुये हैं। बौद्ध धर्मावलंबी अपनी सामर्थ्यानुसार कलाकारों को पारिश्रमिक देकर बौद्ध मन्त्रों को पत्थरों पर खुदवाते हैं और पुण्य अर्जित करते हैं।

इस पहाड़ी के आरम्भ में ही बौद्ध दर्शन अध्ययन संस्थान हैं। इसके बाद यहाँ अध्ययन करने वाले भिक्षुओं व पढ़ाने वाले आचार्यो के आवास स्थल हैं। मुख्य मन्दिर के बांयी ओर तीन मन्जिला

नांग्याल तान्त्रिक महाविद्यालय हैं। इस महाविद्यालय में लगभग 80 भिक्षु छात्र हैं और बौद्ध दर्शन अध्ययन संस्थान में भिक्षु छात्रों की संख्या 50 के लगभग हैं। भिक्षुओं के साथ–साथ अनेक भिक्षुणियाँ भी यहाँ से थोड़ी दूर सामने की पहाड़ी पर बने भिक्षुणी विहार में हैं।

मन्दिर के सामने नीचे की ओर बने बरामदे में प्रत्येक संध्या को यहाँ छात्रों द्वारा तिब्बती तर्क अम्यास (वाद–विवाद) देखते ही बनता है। इस तर्क पद्धति में वह भिक्षुक जिसे प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं, एक ओर बैठ जाते हैं और अन्य कई प्रश्नकर्त्ता भिक्षु बार–बार ताली बजाकर व विभिन्न भावभंगिगाओं के साथ दूसरे भिक्षुक से प्रश्न पर प्रश्न करते जाते हें। यदि प्रश्नों के उत्तर देने वाला भिक्षु प्रश्न का उत्तर नही दे पाता जो अगल–बगल में बैठे सभी भिक्षुक तीन बार ताली बजाकर उससे पुनः दूसरा प्रश्न दूसरे हैं। इस प्रकार बारी–बारी तर्क अभ्यास द्धारा इन संस्थाओं का प्रत्येक भिक्षुक ज्ञान में पारंगत हो जाता हैं।

सन् 1961 में बनकर तैयार हुये इस मुख्य बौद्ध मन्दिर का नाम चुगल्हाखंड हैं। इसके समकक्ष व पूजा स्थल में प्रवेशकरने के लिये तीनों दिशाओं में एक–एक प्रवेशद्धार हैं। पूजा स्थल के ठीक मध्य में भगवान् बुद्ध की एक विशाल काँस्य मूर्ति हैं, जो छत जितनी ऊँची हैं। इस मूर्ति के बायें ओर पदम्संभव (गुरु रिम्पोछे) की बैठी हुई मुद्रा में कांस्य मूर्ति हैं, जिसमें उनके हाथ में बज्र दर्शाया गया हैं। साथ ही अवलोकिलेश्वर की एक विशाल खड़ी प्रतिमा हैं। इस प्रतिमा में एक के ऊपर एक कुल पाँच सिर बने हैं और प्रत्येक सिर में तीन मुँह हैं। प्रमुख हाथों की संख्या आठ हैं, परन्तु छोटे–छोटे हज़ारों अन्य हाथ हैं। इन दोनों मूर्तियों के सामने एक छोटा सा अति सुन्दर स्वर्ण निर्मित मन्दिर हैं, जो तिब्बत से यहाँ लाया गया हैं। यह मन्दिर शीशें के बक्सें में बन्द हैं। इनके अतिरिक्त अनेकों कलात्मक वस्तुओं को यहाँ संग्रहित किया गया हैं।

तिब्बती पुस्तकालय तथा अभिलेखाकार

तिब्बती पुस्तकालय तथा अभिलेखागार मुख्य मन्दिर से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। इस स्थल को तिब्बती लोग "गेंगदन किशैंग" कहते हैं, जिसका अर्थ हैं सुखद बर्फीली घाटी (Happy Snow Vally) हैं। इसकी स्थापना सन् 1970 में दलाईलामा जी के कर कमलों द्धारा हुई। इस पुस्तकालय और अभिलेखागार की स्थापना का मुख्य उद्देश्य तिब्बती लाईब्रेरी में लगभग 60,000 बौद्ध ग्रन्थ संग्रहित हैं, जो तिब्बती, अंग्रजी, जापानी, कोरिया, चाईनीज़ इत्यादि भाषाओं में हैं।[3] लाईब्रेरी के ऊपरी मन्जिल में संग्रहालय व अभिलेखागार विभाग में लगभग एक हजार दुर्लभ व बहुमूल्य मूर्तियाँ, तंखा, तिब्बती, सिक्के, मुद्रा नोट और अन्य सामग्रियाँ हैं।

तिब्बती लाईब्रेरी के पास ही 'तिब्बती मेडिकल एण्ड आस्ट्रोलोजिकल इंस्टीटयूट' निर्मित हैं। इस चिकित्सा विभाग में प्राचीन तिब्बती आचमी पद्धति से रोगियों का इलाज करने की विधि छात्र छात्राओं को सिखाई जाती हैं।

तिब्बती इंस्टीटयूट ऑफ परफारमिंग आर्ट (TIPA)

तिब्बतयिन इन्सटीटयूट ऑफ परफारमिंग आर्टस (TIPA) नामक संस्था की स्थापना सन् 1959 ई० में पर पावन इलाईलामा जी ने मैकलोड़गंज धर्मशाला में किया। इस संस्था को आरम्भ करने का उद्देश्य तिब्बती संस्कृति को सुरक्षित रखना था और आज भी यह संस्था (TIPA) लहासा के गीत, संगीत, नृत्यकला, आपेरा (ड्रामा) तथा तिब्बती वाद्यों इत्यादि को सुरक्षित रखने के कार्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

इस सांस्कृतिक संस्थान (TIPA) का उद्देश्य न केवल तिब्बती संस्कृति और कला को सुरक्षित मात्र रखना हैं, अपितु साथ ही समूचे विश्व में तिब्बती संस्कृति का प्रसार करना भी हैं। इस कला–शिक्षण संस्थान के विभिन्न छात्र–छात्राओं ने अन्य देशों में जाकर विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये हैं। और सम्मान व पुरस्कार अर्जित किये हैं। विभिन्न देशों के नाम व वर्ष निम्मलिखित तालिका से स्पष्ट हो जाते हैं:–

वर्ष	देश का नाम
1975	आस्ट्रेलिया, स्विज, हालैण्ड, बैलजियम, यू० एस० ए०, कनाडा
1976	आस्ट्रेलिया, सिंगापुर
1986	इटली, पं० जर्मनी, फ्राँस, स्विज
1988	यू० के०, फ्राँस, स्विज
1989	पं० जर्मनी, फ्राँस
1990	डेनमार्क, नार्वे, स्वीडन, फिनलैण्ड
1991	फ्राँस, जर्मनी, ईटली, स्पेन, मैक्सिकों, यू० एस० ए०, यू० के०, बैल्जियम, नीदरलैण्ड, हवाई
1993	बैल्जियम, नीदरलैण्ड, फ्राँस, स्विटज़रलैण्ड
1994	जर्मनी, इटली, जापान
1995	आईलैण्ड स्यूनियन
1996	आस्ट्रिया, यू० एस० ए०

अभी हाल ही में, अप्रैल, 1997 में TIPA के गायक, वादक, नर्तक तथा नाटक कलाकारों का एक दल हौलैण्ड में अपनी कला का प्रदर्शन करके लौटा है। इस प्रकार TIPA राष्ट्रीय, अन्तराष्ट्रीय स्तर पर तिब्बतियन संस्कृति के प्रसार कार्य करने में जुटी हुई हैं। इस सम्बन्ध में परम पावन दलाईलामा जी के शब्दों में "Today we are going through a critical period of time : we are a nation, which has a one-a-kind cultural legacy of the past and now we must face the risk of seeing it disappear. We need your help, the international help, because protecting a one-if-a-kind ancient culture, responsibility not only of the nation affected, but also of the world community.[4]

आज 'तिब्बतियन इन्स्टीट्यूट ऑफ परफारमिंग आर्टस में 55 के लगभग नायक–नायिकायें हैं। इन्ही नायक–नायिकाओं को विभिन्न श्रेणियों में बांटा गया हैं। उदाहरणार्थ शिक्षक, अध्यापक, जूनियर शिक्षक, साधारण प्रस्तुतकर्त्ता, संगीतकार, वाद्यकार एवम् शिक्षार्थी। एक नया कलाकार कम से कम एक वर्ष में शिक्षण के उपरान्त ही आपेरा, लोकनृत्य, एकल गीत, वादन आदि के कार्यों में भाग ले सकता हैं।

भारत के अलावा नेपाल में भी TIPA नामक सांस्कृतिक संस्था तिब्बत की कला एंव विचारों को संरक्षित रखने के प्रयास कार्य में जुटी हुई हैं। साक्षात्कार में जानकारी के अनुसार "धर्मशाला और नेपाल की TIPA शाखाओं में निरन्तर आपसी तालमेल हैं ताकि तिब्बतियन इन्स्टीट्यूट ऑफ

परफारमिंग आर्टस् नामक स्कूल राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नया से नया कार्यक्रम प्रस्तुत कर सके और ख्याति अर्जित करें।

तिब्बतियन इन्स्टीट्यूट ऑफ परफारमिंग आर्टस् (TIPA) अपने आप में एक स्वतन्त्र संस्था है। वर्तमान में इस में 143 सदस्य हैं। जिसमें से 23 छोटे बच्चे हैं, जो 7 से 14 वर्ष के आयु वर्ग में आते है, इन बच्चों को TIPA में सामुहिक रुप से संगीत शिक्षा दी जाती हैं। इस समय TIPA में तीन वर्ष के लिये 12 अध्यापकों का प्रशिक्षण कार्य चल रहा हैं। यहाँ यह प्राध्यापक गायन–वादन, नर्तन तथा नाटकों की शिक्षा ले रहे हैं। ट्रेनिंग ले रहे अध्यापकों में 6 पुरुष तथा 6 स्त्रियाँ हैं जो देश–विदेश के विभिन्न क्षेत्रों जैसे सिक्किम, लहासा, लददाख आदि से आये हैं। प्रशिक्षण कार्य पूर्ण होने के पश्चात् इन प्राध्यापकों की नियुक्ति विभिन्न तिब्बतियन विलेज चिलड्रन स्कूलस् (TVCS) में संगीत अध्यापक के रुप में हो जाती हैं।

इसके अतिरिक्त TIPA में 15 सीनियर कलाकार, 10 प्रशिक्षक, 11 जूनियर कलाकार, 8 क्राफट–मैन, 13 टेलरिंग विभाग में तथा 3 शूज़ मेकर्स विभाग में, 10 इस्ट्रूमैंटस् में किक विभाग में हैं। TIPA की यह विशेश जानकारी TIPA के सैक्ट्री ने 30–5–1997 को दी।

संदर्भ

1. कांगड़ा गज़टीयर – भाग – 1, **पृष्ठ** 16.
2. 'दलाईलामा' एक धर्मिक गुरु की पदवी हैं साधारणतयः इन पुरोहित राजाओं को 'दलाईलामा' कहा जाता हैं, किन्तु तिब्बती इन्हे "ग्याल–वा–रिन–पो–चे" कहते हैं, जिसका अर्थ हैं मूल्यवान आभायुक्त रत्न।
3. तिब्बतियन लाईब्रेरी के डाइरेक्टर ग्यात्सों छेंरिग के अनुसार. (1995). "तिब्बती भाषा, कला व संस्कृति सम्बन्धी अध्ययन साम्रगी विश्व में सम्भवतः सबसे बड़ा केन्द्र हैं।" साक्षात्कार – दिनांक 11–1–1995.
4. Information on touring TIPA. A Information book Page **3.**

Books

5 कांगड़ा गज़टीयर – भाग – 1, **पृष्ठ** 16.
6. Information on touring TIPA. A Information book Page **3.**